तालीमार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर अभिमुखता कार्यशिबिर का प्रभाव

दीपिकाबहन डी. राठोड
व्याख्याता
श्रीमती एम. एन. के. दलाल एज्युकेशन कालेज फोर विमेंन,अमदावाद

१.प्रास्ताविक

आज शिक्षा में शिक्षक की प्रतिभा के प्रति आशंका के कई बादल छाये हुए है। आज का शिक्षक शायद परीक्षा के गुणांकन का सवाल है वहाँ तक सबसे ज्यादा नंबर प्राप्त करता है। आज ९० प्रतिशत गुण पाना साधारण सी बात लगती है। बीस साल पहेले तो ये ईतना आसान नहीं था । साथ-साथ ये भी निरीक्षण रहा है कि, उंचे नंबर प्राप्त होने के बावजूद भी अगर विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान, उनकी बोलचाल की शैली, उनका अन्य लोगों के प्रति व्यवहारमें नोंधपात्र सिध्धि दिखाई नहीं देती। तालीमी महाशाला में जो भी स्नातक और अनुस्नातक तालीमार्थियों पढने के लिए आते है उनके साथ भी यही अनुभव देखने को मिलता है। वे सभी एक सालमें तालीम पाकर शिक्षक तो हो जाते हैं, पर वास्तवमें अध्ययन की जो कला उन लोगो में उजागर होनी चाहिए वो नहीं हो पाती । एक चिंतक ने सही कहा है कि, Teaching is a scientific attend an artistic Science तो ईस कुशल अध्यापन कला को आत्मसाद करने के लिए तालीमार्थि को बी.एड्. की तालीम के साथ कुछ विशेष ऐसे कार्यक्रम देने आवश्यक है कि जैसे उनका व्यक्तित्वका और उनकी अभिव्यक्ति का महत्तम विकास हो सके। डॉ. मोहनभाई पंचाल (२००३) ने आज के शिक्षा के प्रति व्यथा प्रकट करते हुए ये निश्चित रुप से कहा है कि आज शालाओ में अच्छे शिक्षक का अकाल पड़ा है। ऐसे अच्छे अध्यापक कहाँ से लाए ये सबसे बड़ा सवाल है। शिक्षक की सज्जता की चर्चा करते हुए उन्होंने विषयवस्तु, अध्यापन पध्धति और व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में काफी जोर दिया है। श्री पंचालजी ने व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की खुद की पहचान, उनका प्रसन्न व्यक्तित्व, भाषा समृध्धि, असरकारक वकतव्य देने की कला, प्रार्थना आर तन, मन के उत्तम स्वास्थय पर जोर दिया है।

आज जहां तक शिक्षक की प्रतिभा का सवाल है वहां तक समाज सबसे ज्यादा गुणों की अपेक्षा शिक्षक के पास रखता है। विषयवस्तु को ज्ञान के साथ सहअभ्यास प्रवृत्तियों के प्रति भी उनकी उत्सुखता होनी चाहिए । अगर गुछ ऐसे मूल्यवान प्रसन्नता एवं गम्मत के साथ तालीम दी जाय जिससे उन लोगों पर एक दूसरे के प्रति व्यवहार सायुज्यपूर्ण हो, संकोच दूर हो, आत्मविश्वास बढ़े और अभिव्यक्ति में खुलापन महेसुस हो, तालीम के प्रति विधायक वलण हो ।

इस उदेश्य को लेकर हमारी संस्था के सभी प्राध्यापकों ने मिलकर एक अभिमुखता कार्यशिबिर की योजना बनाई है। जिसमें प्रार्थना सभा का संचालन और भावपूर्ण गान, समाचार वांचन, वक्तव्य कला और एक दूसरे के प्रति परिचय प्राप्त करने की कला आदि के बारे में कार्यशिबिर की रूपरेखा बनाई।

२. कार्यशिबिर पर प्रविधि

अनौपचारिक तौर पर हर साल तालीमार्थियों के व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में हम सब प्राध्यापक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कुछ न कुछ कार्यक्रम या कार्यशिबिर का आयोजन करते रहते थे। और इसका तालीमार्थियों के व्यक्तित्व विकासमें अच्छा प्रभाव दिखाई पड़ता था। इस अनुभव को हम सभी प्राध्यापकों ने मिलकर कार्यशिबिर को एक व्यवस्थित स्वरुप दिया । यह कार्यशिबिर में निम्नलिखित विषयों का समावेश किया गया।

२.१ प्रार्थना सभा

॥ गतः एवम् मनुयाणाम् कारणम् बंधमोक्षयोः ।।

अर्थात् मन बंधन और मुक्ति का कारण है। मन की शुद्धि के लिए प्रार्थणा आवश्यक है । प्रार्थना आत्मा की खुराक है! अशांत मन को शांत करनेका रामबाण ईलाण प्रार्थना ही है। प्रार्थना मन को स्थिर करती है । अध्ययन से पहले मन स्थिर होना चाहिए । प्रार्थना हृदय से भावपूर्ण हो ये आवश्यक है। हमारा ये अनुभव रहा है कि कालेज टाइम में वो लोग प्रार्थना से बंधित रहे है। इसलिए हमें प्रार्थना के बारे में समजाया गया। भावपूर्ण प्रार्थमा से वर्ग का वातावरण प्रफुल्लित, शांत और कार्य करने के प्रति प्रेरित करता है उस बात को स्पष्ट किया।

बाद में पसंदित प्रार्थनाओं को रसबर भावपूर्ण स्वरूप में, सुरीले राग में कैसे गाया जाता है वो सिखाया गया। यहां तक कैसी भाव्भंगिमा में खड़े रहकर प्रार्थना करनी है वो भी सिखाया गया।

प्रार्थना गान के साथ प्रार्थना सभा का संचालन कैसे किया जाय यह भी सिखाया गया । प्रार्थना सभा में सर्व प्रथम मौन, उसके बाद प्रार्थना, समाचार का पठन, किसी शैक्षिक या सामाजिक विषय पर वक्तव्य और अंत में वंदेमातरम गीत का गान किया जाता है। इन सभी कार्यक्रमों का संचालन करना यानी हरेक क्रिया से पूर्व कैसे सबको सूचित करना चाहिए यह सैधांतिक व प्रायोगिक रुप से सिखाया गया ।

२.२ समाचार का पठन

डॉ. गुणवत शाह ने कहा है कि, जो शिक्षक फूरसत के समय में बांचन के प्रति अभिमुख नहीं होता और न किसी को अभिमुख करता है उसे शिक्षण धाम में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है। पुस्तक और वर्तमानपत्र का प्रकाशन बढ़ा है पर बांचन कम हुआ है।

आजकल विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान के प्रति जागरूकता कम दिखाई देती है। दो समाचारपत्र भी कम पढते है। स्थानिक और वैक्षिक स्तर पर जो घटनायें घटती है उनके बारे में जानना सभी के लिए अति आवश्यक है। इसलिए प्रार्थना सभा में समाचारों का पठन करवाते है। कार्यशिबिर में तालीमार्थियों को

समाचारपत्रो में से किस तरह से समाचार एकत्रित करना, उन्हें संकलित करना और पढना यह सिखाया गया। इसके लिए सभी तालीमार्थियों को एक-एक समाचारपत्र देकर, कौन से पन्ने पर किस तरह के समाचार होते है, यह खोजने के लिए और उन समाचारों के संकलित रुप में लिखने के लिए कहा गया । जैसे की वैश्विक समाचार, तंत्री-लेख, शेर बाजार के समाचार, रमत-गमत समाचार, स्थानिक समाचार को कहाँ प्रकाशित किया जाता है वो सब बताया गया। उसके बाद उनको एक आदर्श दिखाया गया (अपनी लिखावट के साथ तुलना करके उसमें सुधार करवाया गया। उसके बाद सही रुपसे पढने की तालीम दी गई।

२.३ वकतव्य

शिक्षक के लिए व्याख्यान कौशल्य अनिवार्य आवश्यकता है। सभी को प्रारंभ से यह कौशल्य हस्तगत नहि होता है। उन्हें व्याख्यान की तालीम मिले इसलिए प्रार्थना सभा में हररोज एक-एक तालीमार्थि किसी शैक्षिक या सामाजिक विषय पर वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया जाता है ।शुद्ध उच्चार, उचित आरोह-अवरोह और उचित भावों के साथ मौखिक अभिव्यक्ति की तालीम कार्यशिबिर में दी गई। सबसे पहले तालीमार्थियों को दश-दश की संख्या में जूथ बनाके विभाजित किया गया । हर एक जुथ में सभी को अपने जीवन में जो वार्ता पसंद आई हो, इस को कहने को कहा गया । हर एक जूथ में जो श्रेष्ठ वार्ता कथन किया गया हो उस को वर्ग में सबके सामने बोलने को कहा गया। बाद में सबको ये कहना था कि कौनसी वार्ताकथन शैली सबसे ज्यादा पसंद आई और क्यु पसंद आई वो कहना था । इसके बाद जो जो मुद्दे तालीमार्थियों ने बताया वो सभी असरकारक वकतव्य के घटकों के स्वरूप में स्फूरित होते रहते थे। बाद में प्रशिक्षक द्वारा असरकारक वक्तव्य का निर्दशन दिया गया। सभा में किन-किन विषय पर वक्तव्य दे सकते है उसके बारेमें भी मार्गदर्शन दिया गया।

२.४ लेखन कार्य

चाहे परीक्षा में उच्च मात्रा में नंबर प्राप्ति होती हो पर सामान्य निरीक्षण हमेशा ये रहा है कि विद्यार्थी में लेखन कौशल्य के विविध घटकों के संदर्भ में सजागता कम मालूम होती है। भाषा में स्नातक, अनुस्नातक विद्यार्थियों की भी गलतीयों होती है भाषा-सज्जता गणित, विज्ञान के विद्यार्थी कम महत्त्व मानते है। लेखन कार्य में सही हिज्जेवाली लिखावट बहुत कम पाई जाती है। इस शिस्त के बारे में शिक्षक का जागरुक होना अति आवश्यक है। इस बात को ध्यान रखते हुए हिज्जे की सही पहचान हो, इसलिए एक कार्यशिबिर किया गया । बी.ऐड. की तालीम के दरम्यान जो शब्द बार-बार उपयोग में लिए जाते है एसे १०० शब्दों को बोलकर लिखाया गया। बाद में रोल-अप बोर्ड पर सही हिज्जवाले शब्द बताये गए । सबने औरो के लिखे हुए शब्दों का परिक्षण किया। इसमें खेद की बात ये है कि सभी शब्द सही लिखे हो ऐसा एक भी तालिमार्थी नहीं मिला १०० शब्दो में से ८० शब्द सही हो एसे १२ तालिमार्थी पाये गए । ५० शब्द सही हो एसे ३५ विद्यार्थी पाये गए । उन लोगों को खुद भी अंदाज नहीं था कि उनकी भाषामें इतना दारिद्रय है। इस परीक्षण के बाद हिज्जो के नियम बताये गए और अभि, पर, परि, कार जैसे प्रत्ययों के उपयोग के उपलक्ष में भी एक शब्द रमत का आयोजन किया गया। इनसे उसकी शब्द समृध्धि में सुधार लाने का प्रयत्न किया गया ।

२.५ कार्यशिबिर का आयोजन

कार्यशिबिर का आयोजन शैक्षिक सत्र के शुरू होने के दो दिन बाद आरंभ किया गया। हरएक एका एक कार्यशिबिर का आयोजन होता साता था । यह कार्यशिबिर चार दिन तक चली । हर एक कार्यशिबिर में दो-दो प्राध्यापक की टीम होती थी और टीम टीचिंग से हर एक कार्यशिबिर का आयोजन होता था। हर एक कार्यशिबिर ढाई से तीन घंटे तक रहती थी।

अवलोकन से ये सहज पता चलता था कि ऐसी कार्यशिबिर का उनका प्रथम अनुभव था और वो इसे बेहद पसंद करते थे। कार्यशिबिर करने का ढंग बहुत ही अनौपचारिक तरीका था। उसमें तालिमार्थि रसपूर्वक भाग लेते थे और वातावरण प्रसन्न और उत्साहपूर्ण होता था ताकी तालिमार्थियों नि:संकोच अभिव्यक्ति कर सके।

२.६ कार्यशिबिर के प्रति तालीमार्थियों का प्रतिभाव

इस कार्यशिबिर के बाद तालीमार्थियों या क्या प्रतिभाव रहा, इससे उनके व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ा और इस तरह की कार्यशिबिर में ये लोग कौनसे नये सुझाव देना चाहते हैं उनकी जानकारी प्राप्त करने के लिए एक अभिप्रायाचलि दी गई। अभिप्रायावलि में १२ विधान थे। जिस में से ६ विधान विधायक और ६ विधान निषेधक थे। उस अभिप्रायावलि के परिणाम इस प्रकार है। ९५ से ९७ प्रतिशत तालीमार्थियों ने निम्नलिखित अभिप्रायों में अपना विधायक समर्थन दिया।

- इस कार्यशिबिर से बी.एड. की तालीम में ज्यादा रस खिला सके है।
- कालेज के प्राध्यापक और तालीमार्थियों के साथ आत्मीयता का विकास करणे में सहयोग मिला।
- गम्मत के साथ ज्ञान देते हुए प्रसन्न वातावरण में पढाई करने का मझा आता है।
- ऐसी कार्यशिबिर से खुद के विचारों के स्वाभाविक और असरकारक ढंग से पेश करने की सुझका विकास हुआ है।
- प्रार्थना गान की तालीम से समुह गान ज्यादा असर पैदा करता है ।
- लेखन में शुद्ध हिज्जो को उपयोग करने के कौशल्य का विकास हुआ है।

निम्नलिखित निषेधक विधानों के प्रति ९० प्रतिशत तालीमार्थियों ने अपना समर्थन प्रकट नहीं किया।

- ऐसी कार्यशिबिर व्यक्तित्व विकास में सहयोगी नहीं होती।
- ऐसी कार्यशिबिर से समय बिगडता है और कुछ सिख नहीं सकते।
- समाचार बांचन में होती हुई गलतीयों सुधारने की सुझ का मुजमें विकास नहीं हुआ।
- सभा संचालन अच्छी तरह कर सकेंगे, ऐसा विश्वास खील पाया है ऐसा मुझे नहीं लगता।
- प्राध्यापकों की कार्यशिबिर को असरकारक ढंग से पेश नहीं कर सके।
- कालेज में जल्द से अनुकूलन साधने में ऐसे कार्यशिबिर सहयोगी नहीं होते।

३. कार्यशिबिर का व्यक्तिगत लाभ

इस कार्यशिबिर में आप का व्यक्तिगत रूप से क्या फायदा हुआ। इसके बारे में अलग अलग २० फायदे का आलेखन मिला। इसमें निम्नलिखित लाभों का तालीमार्थियों ने जिक्र किया था। इसमें से प्रमुख लाम इस प्रकार है।

- कभी किसी से बात न की हो उनसे बातचीत कैसे हो वो जान सके।
- प्रश्न पूछने की हिंमत आ गई।
- गज्मत के साथ ज्ञान को अभिव्यक्त करना सीखे।
- शर्म और संकोच के बिना खुद के विचार प्रकट कर सकने की कला का विकास हुआ।
- शुद्ध हिज्जो के साथ लिखना और बोलना।
- सभाक्षोभ का डर निकल गया।
- इस कार्यशिबिर से बी.एड. की तालीम सरल हो जायेगी ऐसा लगा ।
- एक सफल शिक्षक के लक्षणों के बारे में पता चला।
- दिनभर की थकान चली गई।

४. नये कार्यशिबिर के लिए सुझाव

तालीमार्थियों ने नये कार्यशिबिर के लिए बहोत सारे सुझाव दिये है। उनमें से इन लोगों की सृजनशीलता का भी पता चलता था और हमें भी नये-नये कार्यशिबिर का आयोजन करने की दिशा भी मिली । उन्होंने और ४५ तरह के कार्यशिबिर की लंबी यादी दी है। उनमें से प्रमुख कार्यशिबिर के नाम इस प्रकार है। आदर्श पठन, नाटक, नृत्य, महेंदी, निबंध लेखन, गाणितिक गम्मत, सामाव्य ज्ञान की कसोटी, जोक्स को सही ढंग से कहना, अभिनय, कौशल्यवृत्ति पर चर्चा, स्व परिचय, काव्यपूर्ति, शब्द-रमत और समूह चर्या जैसे विषयों पर कार्यशिबिर का आयोजन किया जा सकता है।

५. उपसंहार

ये बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि ये कार्यशिबिर को करने में सभी प्राध्यापक और तालिमार्थि दोनों को गम्मत के साथ ज्ञान का संयोग प्राप्त हुआ। प्राध्यापकों को भी लगा कि जिस तरह से अभ्यासक्रम के अध्यापन पर जोर दिया जाता है, और परीक्षा को जो महत्त्व दिया जाता है उससे शिक्षा का सही उदेश्य सिद्ध नहीं होता । व्यक्तित्व विकास में ऐसे कार्यक्रम असरकारक प्रभाव डाल सकते हैं ।

श्री कबीरजी कहते है कि "शिक्षण के नवनिर्माण के कार्य में सबसे महत्त्व का स्थान शिक्षक का है। - शिक्षक की योग्यता बढ़ाने में जीतना भी कार्यक्रम हो वो सभी शिक्षण का नवनिर्माण का कार्य बन जाता है। अगर इस तरह से शिक्षण नवनिर्माण का कार्य होता तो डा. पंचालश्री(२००३) ने अच्छे शिक्षकों के अकाल की व्यथा व्यक्त की है इसे किसी हद तक हम कम कर सकेंगे ।

संदर्भग्रंथ

१. ત્રિવેદી, આર. એસ. (૨૦૦૦). 'પ્રશિક્ષણ એક નૂતન અભિગમ' ગુર્જર ગ્રંથરત્ન કાર્યાલય, અમદાવાદ-૦૧
૨. પંચાલ, મોહનભાઈ (૨૦૦૩). 'શૈક્ષણિક ચિંતન' નવભારત સાહિત્ય મંદિર, અમદાવાદ-૦૧
૩. પંચાલ, મોહનભાઈ (૨૦૦૨). 'શિક્ષણની આજ અને કાલ' નવભારત સાહિત્ય મંદિર, અમદાવાદ-૦૧
૪. પંચાલ, ધર્મિષ્ઠા (૨૦૦૧). 'શૈક્ષણિક સંવેદનાઓ' નવભારત સાહિત્ય મંદિર, અમદાવાદ-૦૧
૫. દવે, સંધ્યા (અનુ.) 'કેળવણીનો કલરવ' વિશ્વ સંવાદ કેન્દ્ર, અમદાવાદ-૦૯